सूफ़ी बुज़ुर्गों
की
अनमोल बातें

संकलन एवं व्याख्या
मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ

क्रम

1.	भूमिका	5
2.	रसूल (सल्ल०) का आज्ञापालन	7
3.	सूफ़ीवाद की मूल आत्मा	8
4.	यथार्थ दर्शिता	10
5.	ईश्वर से सम्बन्ध और ईश-भय	12
6.	दृष्टि परलोक (आख़िरत) पर	15
7.	परोक्ष (ग़ैब) का महत्व	16
8.	सुकर्म	17
9.	मानव-आत्मा	18
10.	मौन	20
11.	प्रभु-रचना या सृष्टि	22
12.	नमाज़ और उपासना	24
13.	समय	26
14.	कुछ महत्वपूर्ण विषय	27

बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

"अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान बहुत कृपाशील है"

भूमिका

इस्लाम जैसा कि उसके नाम ही से स्पष्ट है, अपने आप को सम्पूर्ण रूप से अपने स्रष्टा, पालनहार और स्वामी ईश्वर के हवाले कर देने का नाम है। यानी अपना पूरा जीवन ईश्वर के आदेशों और निर्देशों के अनुसार व्यतीत करने का नाम इस्लाम है। और ईश्वर के आदेश हमें पवित्र क़ुरआन और ईश्वर के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) की पवित्र जीवनी से प्राप्त हो सकते हैं। हमें यह बात अपने समक्ष अवश्य रखनी चाहिए कि इस्लाम ने केवल बाह्य जीवन को संवारने और दुरुस्त रखने के लिए ही क़ानून, नियम और सिद्धान्त आदि की शिक्षा नहीं दी है बल्कि धर्म के आन्तरिक पक्ष और जीवन के वास्तविक लक्ष्य और रहस्य को समझने पर भी ख़ास ज़ोर दिया है।

इस्लामी विद्वानों ने इस्लामी क़ानून और शरीअत के आदेशों पर जो काम किया है वह असाधारण है। इसी तरह सूफ़ियों ने दीन या धर्म के मूल तत्व और रहस्य को समझने का जो प्रयास किया है और धर्म के आध्यात्मिक या रूहानी पहलू के विषय में जो कार्य किए हैं, उसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

इस पुस्तक में वर्तमान समय के महान इस्लामी विद्वान मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ ने सूफ़ी महापुरुषों की कुछ अनमोल बातें विभिन्न शीर्षकों के अन्तर्गत संकलित की हैं। इसमें जीवन, आत्मा, प्रभु से सम्बन्ध और अध्यात्म आदि के विषय में इस्लामी दृष्टिकोण से विचार व्यक्त किए गए हैं। उनके अध्ययन से ही अन्दाज़ा किया जा सकता है कि यह चिन्तन और विचार कितने मूल्यवान और हमारे लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं।

इस्लामी साहित्य ट्रस्ट (रजि.) दिल्ली हिन्दी भाषा में इस्लाम से सम्बन्धित पुस्तकें तैयार करने की सेवा में लगा हुआ है। इस पुस्तक को प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष हो रहा है। इस पर हम अपने पालनहार ईश्वर का शुक्र अदा करते हैं और साथ ही हम लेखक महोदय के भी आभारी हैं कि उन्होंने लोगों के लिए यह संक्षिप्त मगर अतिलाभदायक पुस्तक संकलित की। ईश्वर उन्हें इसका अच्छा बदला प्रदान करे।

आशा है हमारे पाठकों के लिए यह प्रयास अवश्य लाभदायक होगा।

भवदीय
—नसीम ग़ाज़ी फ़लाही
सेक्रेट्री
इस्लामी सहित्य ट्रस्ट
(दिल्ली)

रसूल (सल्ल०) का आज्ञापालन

"शरीर को हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (सल्ल०) का अनुवर्ती रखना और दृष्टि सत्य (ईश्वर) पर रहे, यही दर्वेशी (सन्त-पथ) है।"

–**हज़रत गुलाम अली (रह०)**

व्याख्या – सत्य या ईश-ज्ञान प्राप्त करने का प्रामाणिक साधन नुबूवत या पैग़म्बरी है। ईश्वर ने मनुष्य के मार्गदर्शन के लिए उसे पैदा करने के साथ पैग़म्बरी का सिलसिला जारी किया। पैग़म्बरों या नबियों पर प्रकाशना (Revelation) द्वारा लोगों के मार्गदर्शन के लिए अपनी किताबें अवतरित कीं। जिस तरह प्रकाश या रौशनी के बिना आँख काम नहीं कर सकती, ठीक उसी तरह सत्य को जानने का प्रामाणिक साधन नुबूवत या पैग़म्बरी है। रसूल (सल्ल०) की शिक्षाओं का प्रकाश ही हमें भटकने और गुमराह होने से बचा सकता है। इसके बिना हम अविश्वास और संशय से मुक्त नहीं हो सकते। नबियों की शिक्षाओं से हमें ईश्वर का ज्ञान भी प्राप्त होता है और हम जीवन के मूल उद्देश्य और आशय से भी परिचित हो सकते हैं।

पैग़म्बरी का सिलसिला हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर समाप्त हो गया है। आप (सल्ल०) पर अवतरित किताब 'क़ुरआन' सुरक्षित है। क़ुरआन की सुरक्षा का वादा स्वयं ईश्वर ने किया है। इसके साथ हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का जीवन-चरित्र और आप की शिक्षाएँ पूर्णरूप से प्रामाणिक रूप में मौजूद हैं। ज़रूरत है कि हम क़ुरआन और आप (सल्ल०) की शिक्षाओं और आप (सल्ल०) की जीवनी की रौशनी में जीवन में सत्य मार्ग अपनाकर लोक और परलोक (दुनिया और आख़िरत) में सफलता प्राप्त करें। हज़रत ग़ुलाम अली (रह०) यही कहना चाहते हैं कि हमारे लिए आवश्यक है की नबी (सल्ल०) के अनुयायी बनें, जीवन को सत्य मार्ग पर लगाएँ और आप (सल्ल०) के आदेशानुसार अपनी दृष्टि ईश्वर पर हो उसके ज्ञान और अभ्यास से अपने को कृतार्थ करें।

सूफ़ीवाद की मूल आत्मा

"तसौउफ़ (सूफ़ीवाद) केवल एक तरफ़ लौ लगाना, एक को देखना और इसी हालत में गुज़र करने का नाम है।"

–ख़ाजा बाक़ी-बिल्लाह (रह॰)

"चाहिए कि देखने में लोगों के साथ हो लेकिन अन्दर से हक़ (ईश्वर) के साथ हो।" –हज़रत अब्दुर्रज़्ज़ाक़ अलवी (रह॰)

"फ़क़्र (सन्त-पथ) ईश्वर के सिवा किसी के साथ व्यस्त न होने का नाम है।" –हज़रत शिबली (रह॰)

"सूफ़ीवाद ईश्वर के स्वभाव को ग्रहण करने का नाम है।"

–हज़रत शिबली (रह॰)

"सूफ़ीवाद अल्लाह के साथ आराम हासिल करना है।"

–हज़रत सहल-तुस्तरी (रह॰)

"सूफ़ीवाद इसका नाम है कि सूफ़ी ईश्वरीय प्रकाश से प्रकाशित हो और ईश्वर के स्मरण से आनन्दित हो।" –बूसईद ख़राज (रह॰)

"सूफ़ीवाद सुशील होने का नाम है।" –कशफ़ुल-महजूब

व्याख्या – सूफ़ीवाद के विषय में महापुरुषों के जो विचार यहाँ प्रस्तुत किए गए हैं उनसे साफ़ मालूम होता है कि सूफ़ीवाद वास्तव में ईश्वर से गहरा और ख़ास सम्बन्ध स्थापित करने का नाम है। इसमें मनुष्य ईश्वर के लिए एकाग्र होता है। उसकी निगाह अपने रब (पालनकर्ता प्रभु) पर रहती है। ईश्वर से उसकी लौ लगी रहती है।

ईश्वर के स्मरण और उसकी याद से मनुष्य के हृदय और उसकी आत्मा में ऐसी सफ़ाई आ जाती है कि सत्य को पहचानना उसके लिए मुश्किल नहीं होता। जिस चीज़ को सामान्य विद्वान अपने अध्ययन और तर्क के द्वारा जान पाते हैं वह उसे अपने अन्तर की शुद्धता और अभिरुचि से पा लेता

है। ऐसे लोग जन-सामान्य से विलग नहीं रहते। उनका हक़ अदा करते हैं। लेकिन दिल में उनके ईश्वर बसा हुआ होता है। उससे वे कभी ग़ाफ़िल नहीं होते। अल्लाह की याद और उसका प्रेम उन्हें अल्लाह (ईश्वर) के साथ व्यस्त रखता है। इसी में उन्हें आराम और चैन भी मिलता है। उनकी कोशिश होती है कि वे ईश्वर के गुणों से मार्गदर्शन प्राप्त करें। ईश्वर पवित्र है तो उनमें भी पवित्रता पाई जाए। ईश्वर दानशील है तो वे भी दानशील बनें। लोगों से घृणा नहीं प्रेम करें और उनका हित चाहें। इससे बढ़कर सुशीलता और क्या हो सकती है। हमारा सम्बन्ध ख़ुदा और उसके बन्दों के साथ अच्छे-से-अच्छा हो।

यथार्थ दर्शिता

"प्रत्येक चीज़ ईश्वर के गुण का प्रतीक है। किन्तु मानव-हृदय ईश्वर के सभी गुणों का प्रतीक है।"

—मौलाना अशरफ़ अली थानवी (रह०)

"जीवन अमरत्व की अभिव्यक्ति है।"

—मौलाना अशरफ़ अली थानवी (रह०)

"ज्ञान एक प्रकाश है जो ईश्वर दिल में डालता है। ज्ञान अधिक रिवायत का नाम नहीं है।" —इमाम मालिक (रह०)

"कर्म में अधिकता नहीं। परिपूर्णता अपेक्षित है।"

—मौलाना थानवी (रह०)

"शरीअत की सभी ज़ाहिरी चीज़ें भी वास्तव में आन्तरिक चीज़ों ही से सम्बन्ध रखती हैं। उदाहरण के लिए ईमान देखने में मौखिक इक़रार है। लेकिन मूलतः दिल की तसदीक़ (हृदय की पुष्टि) का इसमें शामिल होना आवश्यक है।" —कशफ़ुल-महजूब

व्याख्या — महापुरुषों की इन बातों से कई चीज़ें मालूम होती हैं। दिल में यदि सफ़ाई हो और उसमें किसी प्रकार का बिगाड़ न आया हो तो वह ईश्वर के सभी गुणों का प्रतीक बन जाता है। दूसरी चीज़ों से ईश्वर के कुछ ही गुणों का प्रदर्शन होता है।

जीवन अमरत्व का संदेश है। इसे यदि हम न समझ सके तो जीवन के मूल्य का हमें आभास न हो सका। क़ुरआन के लगभग सभी पृष्ठों पर इसका ध्यान दिलाया गया है। मनुष्य के लिए जीवन की अमरता उसकी नियति (तक़दीर) है। ज़रूरत है कि वह अपने चरित्र से अपने को इसके योग्य सिद्ध कर सके।

ज्ञान वास्तव में अधिक जानकारी और हदीस और रिवायतों को कंठस्थ

कर लेना नहीं है, बल्कि यह तो एक समझ और रौशनी है जो पवित्र आत्मा लोगों के दिलों में डाली जाती है।

महत्व इसका है कि कर्म और उसके मूल उद्देश्य के मध्य संगति पाई जाए। ग़ाफ़िल दिल से अधिक कर्म और उपासना को विशेष महत्व प्राप्त नहीं। अभीष्ट कर्म की परिपूर्णता है और वह यह है कि हमारा कोई कर्म अपनी आत्मा से रिक्त न हो।

अन्तिम कथन जो सूफ़ीवाद की महत्वपूर्ण किताब से उद्धृत किया गया है, उसमें एक विशेष बात बताई गई है और वह यह है कि धर्म में मनुष्य के अन्तर और आन्तरिक चीज़ों को मौलिक महत्व प्राप्त है। शरीअत के सभी ज़ाहिरी आदेशों और कर्मों का सम्बन्ध अन्तर से है। वे केवल शुष्क कर्म-कांड नहीं हैं। इसे समझने के लिए हज़रत शाह वलीउल्लाह (रह०) की किताब 'हुज्जतुलल्लाहिल-बालिग़ा' से मदद ली जा सकती है।

ईश्वर से सम्बन्ध और ईश-भय

"ईश्वर ने शरीर की रचना की तो उसका जीवन प्राण (आत्मा) से सम्बद्ध कर दिया और जब दिल बनाया तो उसका जीवन अपने-आप से सम्बद्ध कर दिया।" —कशफ़ुल-महजूब

"वास्तविक दृष्टि ईश्वर पर होती है, अन्य पर नहीं। बन्दे की अपनी हस्ती भी अन्य में शामिल है (इसलिए उसे भी अपने लिए आवरण (पर्दा) नहीं बनने देता)।" —कशफ़ुल-महजूब

"ईश्वर दिशा से मुक्त है।"

—शैख़ अबू-उसमान सईद-बिन-सलाम मग़रिबी (रह०)

"तमाम रात और दिन में कोई घड़ी ऐसी नहीं है जिसमें बन्दे पर अल्लाह का फ़ैज़ान (कृपा वृष्टि) न हो।"

—अबू-बक्र शिबली (रह०)

"गुनाह से नहीं, तौबा न करने से बन्दे की पकड़ होती है।"

—सैयिद अली समदानी (रह०)

"मग़फ़िरत (क्षमादान) की वास्तविकता पर्दापोशी है।"

—सहल-तुस्तरी (रह०)

"ऐ अल्लाह, मेरा काम और मेरी कामना दुनिया में तेरी याद है और आख़िरत (परलोक) में तेरे दर्शन।"

—हज़रत राबिया बसरिया (रह०)

"ईश्वर से डरनेवाले सीधी राह पाते हैं और उससे न डरनेवाले गुमराह हो जाते हैं।" —ज़ुन्नून मिस्री (रह०)

"आरिफ़ (ब्रह्मज्ञानी) की पहचान यह है कि लोगों में रहते हुए लोगों से विलग हो। अल्लाह से डरनेवाले को आरिफ़ कहते हैं।"

—ज़ुन्नून मिस्री (रह०)

"उसकी कृपा से मुझे जीवन मिला है जिसे मृत्यु नहीं।"

—बायज़ीद बुस्तामी (रह०)

"अल्लाह को ऐसा समझो कि तू उसे अपनी आँख देख रहा है।"

—अब्दुल्लाह-बिन-मुबारक (रह०)

"परहेज़गारी करने से (बुराई से बचने से) मनुष्य ईश्वर की शरण में आ जाता है।"

—अब्दुल्लाह-बिन-मुबारक (रह०)

"ईश्वर के डरावे से न डरना और ईश्वर के वादों (उसकी दी हुई शुभ सूचनाओं) की आशा न रखना कुफ़्र (अधर्म) है।"

—सहूल-बिन-अब्दुल्लाह तुस्तरी (रह०)

"मैं प्रत्येक समय आन्तरिक रूप से अल्लाह के साथ रहता हूँ यद्यपि देखने में लोगों से मिला रहता हूँ।"

—अबुल-हसन ख़रक़ानी (रह०)

"तौरात में खुदा कहता है मैंने तुम्हें अपना मुशताक़ (चाहनेवाला) बनाया किन्तु तुम न बने।"

—मालिक-बिन-दीनार (रह०)

"मैं उसके (अल्लाह के) साथ में होता हूँ तब मेरा होना, होना होता है।"

—अबू-बक्र शिबली (रह०)

व्याख्या – महापुरुषों के जो कथन यहाँ प्रस्तुत किए गए हैं वे बहुत महत्वपूर्ण और स्पष्ट हैं। यह बात तो स्वर्ण से लिखने की है कि जिस तरह शरीर आत्मा से ज़िन्दा रहता है, उसी तरह दिल की ज़िन्दगी का सम्बन्ध ईश-ज्ञान और उसके प्रेम और उसके स्मरण से है। अपनी दृष्टि ईश्वर पर रहनी चाहिए। इस सिलसिले में स्वयं अपने-आपको भी आवरण न बनने देना चाहिए।

प्रत्येक अच्छी चीज़ के साथ हम उस ईश्वर को न भूलें जो ये चीज़ें हमें देता है। उसकी वृष्टि निरन्तर होती रहती है। यह उसका विशेष अनुग्रह है।

ईश्वर भौतिक चीज़ों के समान नहीं है, वह देश-काल से परे है। इसी लिए 'कशफ़ुल-महजूब' पुस्तक में यह लिखा है कि ईश्वर दिशा से मुक्त और स्वतन्त्र है।

अपनी दुर्बलता के कारण मनुष्य से गुनाह हो जाता है लेकिन सच्चे दिल से तौबा करके ईश्वर से यदि क्षमा माँगें तो वह क्षमाशील और दयावान है, वह हमारे गुनाहों को क्षमा कर देता है और हमारे ऐबों को छिपाता है।

जीवन में सबसे बड़ी चीज़ ईश्वर का भय है। ईश-भय के बिना मनुष्य का सत्यमार्ग पर चलना सम्भव नहीं। हम कितने ही दार्शनिकों और बुद्धिजीवियों को देखते हैं कि वे बुद्धि और चिन्तन के बावजूद सत्य को स्वीकार करने में असमर्थ रहे। कारण यह कि उनके दिल में ईश्वर का भय नहीं था।

ईश्वर और उसके आदेशों को सच्चे दिल से स्वीकार करना अनिवार्य है। फिर अपनी ताक़त और सामर्थ्य के अनुसार सत्य का अनुसरण करे तो मनुष्य अनिवार्यतः ईश्वर को पहचान जाएगा और उसकी प्रसन्नता उसे प्राप्त होगी।

दृष्टि परलोक (आख़िरत) पर

"उस दिन को निकट जान जिसके बाद दुनिया ही न होगी और आख़िरत होगी।" —इमाम हसन बसरी (रह०)

"बन्दे को ज्ञान के अनुसार भय होता है और बन्दे का ज़ुह्द (परहेज़गारी, बैराग्य) दुनिया में उतना ही होता है, जितनी उसे आख़िरत से मुहब्बत होती है।" —फ़ुज़ैल-बिन-अयाज़ (रह०)

"दुनिया को शरीर की आवश्यकता के अनुसार और आख़िरत को आत्मा और हृदय की आवश्यकता के अनुसार हासिल करना चाहिए।" —हज़रत सुफ़ियान सौरी (रह०)

"तन से दुनिया में और मन (दिल) से आख़िरत में रह।" —शैख़ अबू-बक्र कतानी (रह०)

"वह व्यक्ति आख़िरत के मधुरत्व (मिठास) को नहीं पा सकता जो इसका इच्छुक हो कि लोग उसे पहचानें।" —बिश्र याफ़ी (रह०)

व्याख्या – वास्तविक जीवन तो पारलौकिक जीवन है। आख़िरत दुनिया के मुक़ाबले में प्रत्येक पहलू से उत्तम भी है और बाक़ी रहनेवाली भी। इसी लिए उसे अमरलोक कहते हैं। आख़िरत का दिन ईश्वर से अनावरित रूप से मिलने का दिन भी है। सांसारिक जीवन तो आख़िरत की भूमिका और उसकी तैयारी के लिए है। आख़िरत पर जिस व्यक्ति को विश्वास नहीं वह जीवन के मूल्य को नहीं समझ सकता।

आख़िरत दूर नहीं बहुत क़रीब है। आदमी जितना अधिक आख़िरत को पसन्द करेगा। सांसारिक लोभ-माया से मुक्त होगा। वह इसे भी कोई महत्व नहीं देगा कि लोगों में शोहरत हासिल हो।

जिस तरह मनुष्य के शरीर को दुनिया चाहिए उसी तरह मनुष्य की प्रकृति शाश्वतत्व (Eternity) चाहती है। मनुष्य को अमर जीवन (Eternal Life) की कामना प्रदान की गई है।

परोक्ष (ग़ैब) का महत्व

"ईमान और (ईश) ज्ञान की श्रेष्ठता का कारण यह है कि इनका सम्बन्ध 'ग़ैब' (परोक्ष) से है।" —कशफ़ुल-महजूब

व्याख्या – मानव-जीवन और जगत् का बड़ा भाग परोक्ष (unseen) से सम्बन्ध रखता है। जब तक परोक्ष सम्बन्धी चीज़ों और मामलों के विषय में सच्चा ज्ञान प्राप्त न हो हम जीवन का कोई प्रामाणिक दर्शन नियत नहीं कर सकते और अविश्वास और संशय से मुक्त नहीं हो सकते।

जीवन और जगत् के निर्माण का मूल उद्देश्य क्या है? इसका सम्बन्ध परोक्ष से है। आख़िरत का शाश्वत और आनन्दमय जीवन ही वास्तविक जीवन है। आख़िरत और अल्लाह पर ईमान लाना ग़ैब (परोक्ष) पर ईमान लाना है। जीवन और परोक्ष सम्बन्धी चीज़ों की सूचना ईश्वर मानवों को अपने पैग़म्बरों के द्वारा देता रहा है। इससे बढ़कर ज्ञान प्राप्त करने का कोई दूसरा साधन नहीं हो सकता।

फिर ईमान की बरकत से अल्लाह ईमानवालों के दिल को प्रकाश प्रदान करता है। जिन बातों की सूचना अल्लाह ने अपनी किताब या अपने नबी के द्वारा दी है उनपर उन्हें ऐसा विश्वास हो जाता है जिनमें उन्हें तनिक भी सन्देह नहीं होता। अल्लाह ईमानवालों को विश्वास का जो प्रकाश प्रदान करता है उसका सम्बन्ध भी वास्तव में ग़ैब (परोक्ष) से होता है।

सुकर्म

"अच्छे कर्म और जन्नत में वही सम्बन्ध है जो पानी पीने और प्यास के बुझने में है।"

–हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी (रह॰)

"शब्दों की शुद्धता का दर्जा दिल की नीयत की शुद्धता से कम नहीं है।"

–हज़रत हबीब अजमी (रह॰)

"जो ज्ञानवान अपने ज्ञान के अनुसार कर्म न करे वह उस शरीर की तरह है जिसमें प्राण न हो।"

–इमाम अबू-हनीफ़ा (रह॰)

व्याख्या – ज्ञान कर्म की अपेक्षा करता है। यदि कोई अपने ज्ञान के अनुसार कर्म नहीं करता तो उसका ज्ञान निष्प्राण है। उस ज्ञान का विशेष महत्व नहीं।

जिस तरह आदमी के लिए ज़रूरी है कि उसे हृदय की शुद्धता प्राप्त हो, कपटाचार से मुक्त हो। उसका इरादा नेक और नीयत दुरुस्त हो, ठीक उसी तरह उसके लिए यह भी आवश्यक है कि उसके मुख से जो शब्द भी निकलें वे भी दुरुस्त और शुद्ध हों। वह सत्यवादी हो। भाषा की दृष्टि से भी उसके मुख से निकले हुए शब्द शुद्ध हों। इसका ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है। शब्द भी आदमी के चरित्र के परिचायक होते हैं।

सुकर्म और जन्नत के मध्य जो सम्बन्ध पाया जाता है उसे हज़रत थानवी (रह॰) ने एक महसूस मिसाल द्वारा स्पष्ट किया है। जिस तरह पानी से प्यास बुझती है, ठीक उसी तरह अच्छे कर्मों से आदमी जन्नत का अधिकारी हो जाता है।

मानव-आत्मा

"आत्मा परिमाण (Quantity) और नियत रूप से मुक्त है। उसका प्रदर्शन विभिन्न रूपों या मिसालों में हो सकता है।"

–शाह अब्दुल-अज़ीज़ मुहद्दिस देहलवी (रह०)

"आत्मा मकानी (भौतिक स्थान से) नहीं। क्योंकि जो मकानी होती है उसका विभाजन सम्भव होता है।" –इमाम ग़ज़ाली (रह०)

"आत्मा सदैव से नहीं है, वह पैदा की गई है।"

–इमाम ग़ज़ाली (रह०)

"आत्मा अनिवर्चनीय और अयोगिक एवं सीमारहित है।"

–हज़रत शर्फ़ुद्दीन यहया मनेरी (रह०)

व्याख्या – मानव-आत्मा के विषय में महापुरुषों के जो कथन प्रस्तुत किए गए हैं। उनसे मानव की विशिष्टता और श्रेष्ठता का पता चलता है। इमाम ग़ज़ाली (रह०) ने अपनी किताब में आत्मा के विषय में जो कुछ लिखा है वह विस्तृत और तर्कसंगत है।

आत्मा कोई भौतिक चीज़ नहीं है अतः वह दिक्-दिशा और भौतिक स्थान से मुक्त है। मकानी होने की स्थिति में वह विभाजित होती। आत्मा अयोगिक है, उसके टुकड़े नहीं किए जा सकते। आत्मा का विशेष गुण ज्ञान और चेतना है। सामान्य भौतिक चीज़ों से भिन्न होने के बावजूद वह सदैव से नहीं है। ईश्वर ने अपनी शक्ति और सामर्थ्य से उसे अस्तित्व प्रदान किया है।

नबी (सल्ल०) ने कहा है कि : "अल्लाह ने अपने अनुरूप आदम (मानव) को पैदा किया।" मानव-आत्मा में ईश्वरीय गुण (उदाहरणार्थ जीवन, ज्ञान, संकल्प, कल्पना-शक्ति और कर्म आदि) की प्रतिछाया जिस

दर्जा मानव-आत्मा में पाई जाती है वह किसी दूसरी चीज़ में नहीं पाई जाती। मानव-आत्मा (Soul) और ईश्वर में जो अनुकूलता पाई जाती है, इसी लिए ईश्वर ने उसे अपने से सम्बन्धित किया है। यह बड़ी श्रेष्ठता की बात है। मावन-आत्मा को अस्तित्व प्रदान करने में ईश्वर ने अत्यन्त दानशीलता से काम लिया है। यह अलग बात है कि वह अपने बुरे कर्मों से उसे दूषित कर दे।

मौन

"नुबूवत (पैग़म्बरी) के बाद कोई दर्जा नहीं है, किन्तु हिक्मत (तत्वदर्शिता) और हिकमत (wisdom) का लक्षण मौन है। केवल ज़रूरत के समय बात करनी चाहिए।"

–हज़रत अबू-बक्र वर्राक़ (रह॰)

"मौन की लज़्ज़त (रसास्वादन) अल्लाह से नूह (अलै॰) की (दीर्घ) आयु माँगती है ताकि मौन में गुज़ारे।"

–हज़रत-अबू हफ़्स हद्दाद (रह॰)

"जब हुज़ूरी (ईश्वर की उपस्थिति का एहसास) हासिल होती है तब मौन अपना रूप दिखाता है।" –बायज़ीद बुस्तामी (रह॰)

"बातचीत, आवाज़, गति और अभिलाषा सब बाहर की चीज़ें हैं। पर्दे के अन्दर सन्नाटा (मौन) और रोब (तेज) है।"

–बायज़ीद बुस्तामी (रह॰)

व्याख्या – मौन और ख़ामोशी (Silence) के महत्व को दुनिया के सभी मनीषियों और ज्ञानियों ने स्वीकार किया है। यह बड़े पते की बात है कि पैग़म्बरी के बाद यदि किसी चीज़ को कोई दर्जा हासिल है तो वह हिकमत (Wisdom) है और हिकमत (तत्वदर्शिता) का लक्षण मौन है। हिकमत वास्तव में इलहामी ज्ञान को कहते हैं। इसमें संदेह नहीं कि हिकमत एक 'इलक़ाई' (दिल में डाली जानेवाली चीज़) है। इसकी अभिव्यक्ति समयक दृष्टि, बुद्धिमत्ता, परितोष, कृतज्ञता और सज्जनता के द्वारा होती है। हिकमत का गहरा सम्बन्ध मौन से है। ख़ामोश, मौन या शून्य से ही समस्त चीज़ें निकलती हैं। ख़ामोशी में हज़ार नग़मे निहित होते हैं। जिस तरह आन्तरिक वाणी ही व्यक्त वाणी का मूल है। मौन एक भाव है। सौन्दर्य भी वास्तव में एक आन्तरिक भाव है। जिन पवित्र आत्माओं की विशेषता मौन होती है। ईश्वर की ओर से हिकमत उनके दिलों में डाली जाती है। इसी लिए ऐसे

व्यक्ति से लाभ उठाने की शिक्षा नबी (सल्ल०) ने दी है। मौलिक चीज़ आन्तरिक है। बाहर की चीज़ों का भी महत्व है लेकिन उन्हें वह महत्व प्राप्त नहीं है जो आन्तरिक और हृदय से सम्बन्धित चीज़ों को प्राप्त है। बातचीत सारी दौड़-धूप बाहर की चीज़ें हैं। इनकी ज़रूरत से इनकार नहीं किया जा सकता लेकिन खुशनसीब है वह व्यक्ति जो आध्यात्म के महत्व से परिचित है।

हुज़ूरी का भाव अपने साथ मौन लाता है। भौंरा जब फूल का रस लेता है तो उसे चुप लग जाती है।

प्रभु-रचना या सृष्टि

"सारा जगत् ईश्वर की क्रिया है। जिस तरह मनुष्य अपनी गति (चलना-फिरना) या स्थिरता बिना पदार्थ के पैदा कर लेता है उसी तरह ईश्वर ने जगत् को अनस्तित्व से निकाल कर मौजूद कर दिया।"

—हज़रत अनवर शाह कशमीरी (रह०)

"दुनिया में जितनी चीज़ें हैं उन सबमें अल्लाह के गुणों और क्रियाओं की अभिव्यक्ति है।"

—हज़रत इब्न-अरबी (रह०)

"आत्मा जब छाया-लोक (आलम-ए-मिसाल) का वस्त्र पहनकर खाने-पीने के योग्य हो जाए तो वह 'नसमह' (प्राण) कहलाती है।"

—अनवर शाह कशमीरी (रह०)

व्याख्या – सृष्टि की समस्या बहुत ही नाज़ुक है। लेकिन महापुरुषों के कथनों से मन और मस्तिष्क सन्तुष्ट हो जाते हैं। कुफ़्र और शिर्क (अधर्म और बहुदेववाद) में पड़ने से ईश्वर हमें बचा लेता है। वास्तविक अस्तित्व तो वास्तव में ईश्वर का है। जगत् और जगत् की सभी चीज़ें अल्लाह के फ़ैज़ (ईश-कृपा) से पैदा हुई हैं। ईश्वर की सत्ता एवं अस्तित्व किसी चीज़ में शामिल नहीं है। ईश्वर पवित्र, सीमा-मुक्त और अयोगिक है। वह अखन्डित है। सृष्टि का सम्बन्ध ईश्वर की कृपा-छाया से है। सृष्टि से ईश्वर की पूर्णतः और उसकी सत्ता और अस्तित्व में किसी प्रकार का अन्तर नहीं आता। जैसे दर्पण में बाहरी किसी रूप का प्रतिबिम्ब बनता है लेकिन दर्पण में बने प्रतिबिम्ब में वह बाह्य रूप सम्मिलित या प्रविष्ट नहीं होता। हज़रत इब्न अरबी (रह०) कहते हैं कि दुनिया की चीज़ें ईश्वर के गुणों और कर्मों की प्रतीक होती हैं। यह बड़ी श्रेष्ठता की बात है। एक व्यक्ति के पास एक साधरण-सा दर्पण था। वह कहता था कि मैं इसे किसी क़ीमत पर किसी को नहीं दे सकता क्योंकि सैफ़ (यूनान की प्रसिद्ध कवयित्री) ने एक बार इसमें अपना रूप देखा था। यह जीवन-दर्पण ईश-गुणों का दर्पण है। इससे इस

दर्पण के मूल्य का अन्दाज़ा प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है।

हज़रत अनवर शाह कशमीरी ने सृष्टि को ईश्वर की क्रिया कहकर समस्या को अधिक सरल बना दिया जिसे सामान्य व्यक्ति भी समझ सकता है। सम्पूर्ण जगत्, रूप, रंग सब उसकी क्रिया है।

नमाज़ और उपासना

"नमाज़ अल्लाह से मिलने को कहते हैं।" —**बायज़ीद बुस्तामी (रह०)**

"नमाज़ की मूल आत्मा ईश-भय और विनीति (ख़ुशूअ और ख़ुज़ूअ) है और पूरी नमाज़ दिल की हुज़ूरी है।" —**इमाम ग़ज़ाली (रह०)**

"नमाज़ ईश्वर के साथ मिलने का नाम है। इस मिलने को ईश्वर ही जानता है।" —**मौलाना जलालुद्दीन रूमी (रह०)**

"ईश्वर को इस तरह याद करो कि दोबारा याद न करना पड़े (अर्थात् ईश्वर को कभी भूलो ही नहीं)।"

—**अबुल-हसन ख़रक़ानी (रह०)**

इनसान को चाहिए कि आधी रात को उठकर वुज़ू करे और चार रकात नमाज़ पढ़े। यदि यह न हो सके तो दो रकात नमाज़ पढ़े। यदि यह भी न हो सके तो 'ला-इला-ह-इल्लल्लाहु मुहम्मदु-र्रसूलुल्लाह' (अल्लाह के सिवा कोई प्रभु-पूज्य नहीं। हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) अल्लाह के रसूल (पैग़म्बर) हैं। कहे।"

—**अबू-इसहाक़ इबराहीम-बिन-शहरयार (रह०)**

"इबादत ग़ायबाना (परोक्ष) में होती है और वहाँ (आख़िरत में) हुज़ूरी होगी। इसलिए वहाँ इबादत (पूजा, उपासना) नहीं है। केवल ईश-स्मरण रह जाएगा।" —**हज़रत शर्फ़ुद्दीन यहया मनेरी। (रह०)**

व्याख्या – महापुरुषों की इन बातों से क़ई बातें मालूम होती हैं। क़ुरआन से मालूम होता है कि नमाज़ का आदेश अल्लाह की याद और उसके स्मरण के लिए दिया गया है और स्मरण के लिए हुज़ूरी ज़रूरी है। एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी हमारे सामने रहे कि नमाज़ में बन्दा ईश्वर के समक्ष उपस्थित होता है, जो देश-काल से परे है। मानो नमाज़ पढ़नेवाला जगत् में रहते हुए अपनी नमाज़ों में समय और भौतिक स्थान की परिधि से मुक्त हो जाता है। उसकी उच्चता और पवित्रता का क्या कहना!

बन्दा ईश्वर को कभी न भूले यही स्मरण का आधिक्य (ज़िक्रे-कसीर) है। यह बड़ी ही ख़ूबी की बात है कि रात की घड़ियों में भी वह अपने रब को याद करे जबकि लोग सो रहे होते हैं।

दुनिया में अल्लाह की इबादत ग़ायबाना (परोक्ष) रूप से की जाती है। इसलिए कि दुनिया में हमारी आँखों को ईश-दर्शन की सामर्थ्य प्राप्त नहीं। लेकिन आख़िरत में मोमिनों (ईमानवालों) को ईश्वर का ऐसा सामीप्य प्राप्त होगा कि वे ईश्वर के दर्शन भी कर सकेंगे। अल्लाह की हुज़ूरी उन्हें नित्य प्राप्त होगी, जो नमाज़ और इबादत का सौन्दर्य और उसकी मूल आत्मा है। उस लोक में अल्लाह की याद और हुज़ूरी को इबादत का दर्जा हासिल होगा।

समय

"आत्माओं के लोक में भूत और भविष्य एक ही हैं।"

–अबू-बक्र शिबली (रह०)

"विद्वान कहते हैं कि काल (समय) तीन हैं। भूत, भविष्य और वर्तमान। और समय पैदा होता है नभ (फ़लक) की गति से। जिस समय को सम्बद्ध किया जाता है ईश्वर से वह एक अद्वितीय बिन्दु है। भूत, भविष्य, वर्तमान सबसे बाहर है। इसलिए वहाँ न नभ (फ़लक) है न नभ-गति है। वह आदिकालिक और अनन्त है। आदि और अनन्त अद्वितीय बिन्दु हैं। उस सम्बन्ध की दृष्टि से।"

–हज़रत शर्फुद्दीन यहया मनेरी (रह०)

व्याख्या – देश-काल (Time and Space) के विषय में बड़ी बहसें हुई हैं। लेकिन आइनस्टीन से बहुत पहले महापुरुषों ने अपना यह विचार व्यक्त किया है कि काल या समय की हैसियत अवास्तविक और सापेक्ष है। यह कोई वास्तविक चीज़ नहीं है। इसका सम्बन्ध ख़याल और विचार से है। इसी लिए कहा जाता है कि जहाँ समय का पता नहीं चलता उसे हम आत्मा कहते हैं। आवाज़ को देखने की कोशिश और आत्मा में समय की तलाश व्यर्थ है।

कुछ महत्वपूर्ण विषय

इज़्ज़त – "इज़्ज़त (प्रतिष्ठा) वही है जो बन्दे को सत्य अर्थात अल्लाह के हुज़ूर पहुँचा दे।" –हज़रत शिबली (रह०)

सफ़ा – "सफ़ा से अभिप्रेत अल्लाह की जनाब में (ईश्वर के समक्ष) वह हाज़िरी है जो नित्य है।" –दाता गंज बख़्श अली हिजवरी (रह०)

वास्तविक ज्ञान – "ज्ञानवान वह है जो ज्ञान से नहीं बल्कि अपने-आप से (स्वभावतः) ज्ञानी और बुद्धिमान हो।"

–अबुल-हसन ख़रक़ानी (रह०)

ज़ुह्द (वैराग्य) – "जिस चीज़ से हाथ ख़ाली हो उससे दिल भी ख़ाली हो।" –जुनेद बग़दादी (रह०)

सत्य दर्शन – "आख़िरत (परलोक) में जिस चीज़ को दिल चाहे वह चीज़ उसके ख़याल में हाज़िर हो जाएगी। अतः उसका चाहना उसके ख़याल में आने का कारण और उसका ख़याल में आना उसके देख लेने का कारण होगा।" –इमाम ग़ज़ाली (रह०)

ज्ञान (ब्रह्म-ज्ञान) – "ईश्वर इस दुनिया में जानने के लायक़ है और उस दुनिया (आख़िरत) में देखे जाने के लायक़।"

–इमाम ग़ज़ाली (रह०)

"कणभर ईश-ज्ञान में जो आस्वादन (लज़्ज़त) है वह जन्नत की नेमतों में नहीं मिलता।" –बायज़ीद बुस्तामी (रह०)

साक्षात् (मुशाहिदा) – "ईश्वर के गुणों का बन्दे पर प्रकट होना मुशाहिदा है।" –अबू-बक्र शिबली (रह०)

"मुशाहिदा (साक्षात्) इबादत (पूजा) को कहते हैं।"

–सहल-बिन-अब्दुल्लाह तस्तरी (रह०)

तजल्ली (ईश-आलोक) – "तजल्ली से अभिप्रेत ईश-प्रकाश का

वह प्रभाव है जो ईश्वर के प्रिय बन्दों के दिलों पर होता है। जब वे इसके योग्य होते हैं।" —कश्फ़ुल-महजूब

पाकीज़गी (पवित्रता) – "मनुष्य को आध्यात्मिक उन्नति पवित्रता से प्राप्त होती है। केवल कर्म की अधिकता कभी उन्नति का कारण नहीं होती।" —हज़रत अबुल-हसन ख़रक़ानी (रह०)

सब्र – "सब्र करनेवाला ईश्वर से संयुक्त होता है।"

—हज़रत अबू-अली जुरजानी (रह०)

वली (ईश-मित्र) – "जो अपने हाल से ख़ाली और ईश-साक्षात् से बाक़ी हो।" —अबू-अली जुरजानी (रह०)

दर्द (प्रेम-पीड़ा) – "बन्दा अल्लाह को बुद्धि से पहचानता है तो उसे ज्ञान प्राप्त होता है, ईमान से पहचानता है तो उसे सुख प्राप्त होता है और यदि 'मारफ़त' (आध्यात्म ज्ञान) से पहचानता है तो उसे दर्द (प्रेम-पीड़ा) प्राप्त होता है।"

—हज़रत अबुल-हसन ख़रक़ानी (रह०)

फ़ुतूवत (पुरुषार्थ) – "फ़ुतूवत यह है कि तुम लोगों के मामलों में न्याय करो और अपने मामलों में उनसे न्याय के इन्तिज़ार में न रहो।" —हारिस मुहासिबी (रह०)

दावत (आमंत्रण) – "लोगों को उपदेश दो और उन्हें अल्लाह की ओर बुलाओ और अपने को मध्य में ख़याल न करो।"

—हज़रत यूसुफ़-बिन-हुसैन (रह०)

व्याख्या – महत्वपूर्ण समस्याओं के अन्तर्गत महान पुरुषों के जो कथन प्रस्तुत किए गए हैं वे वास्तविक रूप से महत्व रखते हैं। उन कथनों से पता चलता है कि अपने रब (प्रभु) से उनका सम्बन्ध कितना बढ़ा हुआ था। ईश्वर के प्रेम और उसके स्मरण में जीने को वे जीवन समझते थे। ईश्वर की उपस्थिति और उसके सामीप्य के एहसास को वे दुनिया और दुनिया की हर चीज़ से बड़ी नेमत समझते थे। वे जानते थे कि इज़्ज़त (प्रतिष्ठा) ईश्वर से दूरी में नहीं उसके सामीप्य में है और उसकी कृपा और अनुग्रह के बिना

मनुष्य सत्य से वंचित रह जाता है। भले ही देखने में वह कितना ही बड़ा मनीषी क्यों न हो। उनपर यह सत्य प्रकट था कि दुनिया को यह हैसियत हासिल नहीं कि कोई उसे जीवन का मूल उद्देश्य बना ले।

दुनिया में ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करना मनुष्य के लिए अनिवार्य है। उसके दर्शन के लिए परलोक है। ईश-सौन्दर्य और ईश्वर की पूर्णता और सामर्थ्य की निशानियाँ चारों ओर फैली हुई हैं। उसका ज्ञान जीवन का वास्तविक विलास और आनन्द है। दुनिया में उसका साक्षात् या मुशाहिदा यही है कि हम उसके गुणों से परिचित हों और उनसे लाभ उठाएँ। उसके सामीप्य का एहसास हमारे अन्दर भक्ति भाव पैदा करता है। दुनिया में उसे सीधे देखने की ताब हमारी आँखों को नहीं। वर्तमान जीवन में उसकी तजल्ली या आलोकन यही है कि उसके प्रकाश और महिमा का हमारे दिलों पर असर हो। वली (ईश्वर का मित्र) वही है जिसकी दृष्टि वास्तव में स्वयं अपने पर भी न हो। उसका जीवन ईश्वर का साक्षात् होकर रह जाए। हर चीज़ में उसे ख़ुदा की शान और सामर्थ्य दिखाई देने लगे। ऐसे लोगों के यहाँ सब्र और शुक्र (धैर्य और कृतज्ञता) आदि की हैसियत ईश्वर से संयुक्त (वासिल) रहने की होती है। अर्थात् उनके लिए अपने रब से हार्दिक सम्पर्क एवं सम्बन्ध की बात है।

उनके यहाँ प्रेम-पीड़ा को बड़ा महत्व प्राप्त है। ईमान उनके लिए सबसे बड़ा सुख और आनन्द है। जीवन में वास्तविक महत्व पवित्रता और मन की शुद्धता को प्राप्त है। इसके बिना आत्मिक विकास और उच्चता प्राप्त नहीं हो सकती। आत्मा की पवित्रता के बिना मनुष्य के कर्म निष्प्राण होते हैं। जिसके कारण जीवन में जो सर्वोच्चता अभीष्ट है उससे मनुष्य वंचित रह जाता है।

पवित्र आत्माओं के पुरुषार्थ और उनकी हृदय विशालता (Noble heartedness) का हाल यह होता है कि कोई उनके साथ इनसाफ़ करे या न करें लेकिन वे इनसाफ़ का दामन कभी नहीं छोड़ते। उनसे इनसाफ़ ही की आशा की जा सकती है।

फिर ईश्वर के जिस सन्देश और जिस दीन या धर्म को वे सत्य और जिसपर वे मनुष्य की मुक्ति को निर्भर समझते हैं उससे वे स्वयं ही लाभान्वित नहीं होते बल्कि उनकी कामना होती है कि सम्पूर्ण मानव-जाति उससे लाभान्वित हो। इसलिए लोगों को सत्य से परिचित करते और उन्हें ईश्वर की ओर आमंत्रित करते हैं। ईश्वर की बन्दगी और उसके आज्ञापालन से ही ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त होती है और इसी पर मनुष्य की मुक्ति निर्भर करती है। यही चीज़ लोगों को परस्पर जोड़ती और उनमें एकता पैदा कर सकती है।